स दुष्प्रापयशाः प्रापदाश्रमं श्रान्तवाहनः ।

सायं संयमिनस्तस्य महर्षेर्महिषीसखः ।।48।।

अन्वय दुष्प्रापयशाः श्रान्तवाहनः महिषीसखः सः सायं संयमिनः तस्य महर्षे आश्रमं प्रापत्।

अनुवाद किसी अन्य पुरुष से बड़ी कठिनता से प्राप्त करने योग्य (दुर्लभ) यश वाले तथा (दूर तक यात्रा करने से) जिनके रथ के घोड़े थक गए हैं ऐसे राजा दिलीप अपनी महारानी (सुदक्षिणा) के साथ सायंकाल के समय उन (प्रसिद्ध) संयमी महर्षि वसिष्ठ के आश्रम में पहुंचे।

टिप्पणियां

दुष्प्रापयशाः दुःखेन प्राप्तुं शक्यं दुष्प्रापम्, दुष्प्रापं यशः असौ दुष्प्रापयशाः (बहुव्रीहि समास), दुस् उपसर्ग प्र उपसर्ग आप् धातु खल्। दूसरे के द्वारा बड़ी कठिनता से प्राप्त करने योग्य यश है जिसका, दुर्लभ यश वाला, दिलीप का विशेषण।

प्रापत् प्र उपसर्ग आप् धातु लङ्, अन्य पुरुष, एकवचन, पहुँचा।

श्रान्तवाहनः श्रान्ताः (थके हुए) वाहनाः (घोड़े) यस्य सः (बहुव्रीहि), जिसके घोड़े (दीर्घ यात्रा के कारण अब) थक गए थे। महिषीसखः का विशेषण है। वाहन का अर्थ है खींचने वाला, इसलिए जो गाड़ी को खींचता है अर्थात् अश्व।

महिषीसखः महिष्याः सखा (षष्ठी तत्पुरुष) रानी का मित्र।

विशेष 'महिषीसखः' में सखि शब्द का समास होने पर 'राजाहः सखीभ्यष्टच्' इस पाणिनिसूत्र से सखि शब्द के पश्चात् समासान्त 'टच्' प्रत्यय हुआ है। अतः 'सखि' के

स्थान पर समास की अवस्था में अकारान्त 'सख' हो जाता। इसके रूप तब अकारान्त 'राम', 'देव' आदि शब्दों के समान चलते हैं, इकारान्त सखि के समान नहीं।